10.

भारतीय संस्कृति की पोषक – अवधी भाषा

डॉ.(श्रीमती) वसुधा अग्रवाल
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र
डॉ. भगवत सहाय शा. महाविद्यालय (ग्वा.)

अवध प्रदेश –

अवध कौषल महाजनपद की राजधानी साकेत का दूसरा नाम है, ई.पू. छठी शताब्दी में भारत के सोलह जनपदों की चर्चा आई है, उसमें कौषल का नाम प्रमुख है। कहा जाता है कि उससे युद्ध करके कोई जीत नहीं सकता था इसलिये 'देवाना युरोध्या' के अनुसार अयोध्या साकेत का विषेषण था जिसे मुख्य नाम बना लिया गया है। आगे चलकर अवध इतना प्रचलित हुआ कि साकेत एक तरह से लोग भूल गये। अवध का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि हिन्दुस्तान का। इस प्रदेष में आर्यों के पूर्व मंगोलिया किरात और निषाद जाति के लोग रहते थे। संभवतः इन जातियों के साथ ही द्रविण सभ्यता के भी लोग यहां रहते थे। परंतु बुद्ध युग तक आते – आते कम से कम भाषा के स्तर पर सभी जातियाँ घुल मिल चुकी थीं। केवल भाषा ही नहीं वरन् उनमें रक्त मिश्रण भी इस प्रकार हुआ कि मूल जातियों का पता लगाना मुष्किल हो गया।

बुद्ध के समय में कौषल की राजधानी साकेत से श्रावस्ती चली गयी। उस समय वहां के राजा प्रसेनजित के प्रभाव से श्रावस्ती बराबर महत्व प्राप्त करती गयी, परंतु उसकी मृत्यु से जनपद बहुत दुर्बल हो गया और संभवतः मगध सम्राट अजातषत्रु के किसी वंषज ने इसे अपने अधीन कर लिया लेकिन श्रावस्ती का महत्व बना रहा और लगभग एक हजार वर्ष तक भुक्ति प्रदेष के नाम से प्रसिद्ध रही। गुप्तकाल और हर्षवर्धन के काल में भी श्रावस्ती का नाम भुक्ति ही था। लेकिन रामायण काल में लोग साकेत शब्द भूल कर अवध का प्रयोग करने लगे। प्राकृत एवं अपभ्रंष काल में भी इस प्रदेष का 'अडहा' या 'अउधा' कहा जाता था। तुर्क सल्तनत काल तक यह नाम प्रचलित रहा है। अवध का संप्रति नाम फैजाबाद है लेकिन यह नाम बहुत पुराना नहीं जान पड़ता। लगता है कि अवध में नबावी स्थापना के साथ ही यह नाम प्रचलित हुआ है क्योंकि गोस्वामी तुलसीदास जी फैजाबाद से परिचित नहीं दिखाई पड़ते। कौषल चूंकि उत्तरी भारत में पड़ता था और गंगा यमुना का दौआब भी यहीं था इसलिये पष्चिम के आक्रमणकारियों को यह सदैव आकर्षित करता रहा है। जो लोग जिस क्रम में भारत आये यह प्रदेष उन्हे उसी क्रम में आत्मसात करता गया। कौषल का आयाम बहुत विस्तृत था उसमें प्रायः आज का समूचा अवध या इसके भी बाहर के कुछ भाग आते थे, परंतु इन जनपदों की सीमाऐं सदैव एक सी नहीं रह सकती थीं और न ही इनकी भाषाऐं ही अप्रभावित रह सकती थीं। मूल या उत्तर कौषल वाले बढ़ते हुये बघेलखण्ड और छत्तीसगढ़ तक फेल गये। छत्तीसगढ़ का नाम ही पीछे दक्षिण कौषल पड़ गया। इसी तरह मल्ल जनपद उनके पूर्व में हिमालय की तराई में बढ़ते हुये छोटा नागपुर तक पहुँच गये।

भारतीय इतिहास के निर्माण में इस प्रदेष का योगदान मान्यतम रहा है। हिन्दू जाति के आदर्ष मर्यादा पुरूषोत्तम रामचन्द्र का जन्म इसी प्रदेष में हुआ। अवध के महत्व के कारण ही अनेक संतों सन्यासियों ने अपनी साधना भूमि इसी को बनाया। नबावों के काल में यद्यपि ललित कलाओं का खूब विकास हुआ फिर राजनीतिक आकर्षण के कारण अत्यंत शोषण और लूट खसोट से यह प्रदेष आर्थिक रूप से अत्यंत विपन्न एवं जर्जर हो गया। इस कूट शोषण से लोगों में राजनीतिक चेतना अवष्य पैदा हुई जिसके परिणामस्वरूप स्वाधीनता संग्राम में इस प्रदेष ने ऐतिहासिक एवं निर्णायककारी भूमिका अदा की । प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में अवध के नबाव और उनकी

बेगम जीनत महल का नाम अविस्मरणीय है। फैजाबाद के मौलवी अजीमुल्ला खाँ की सेवायें इतिहास सदा याद रखेगा। सम्राट बहादुरषाह द्वितीय का सर्वश्रेष्ठ सिपहसालार खिज्रखाँ अवध (सुल्तानपुर) का रहने वाला था जिसकी बात यदि सम्राट मान लिया होता तो शायद आज भारत का इतिहास कुछ और ही होता। इसी प्रकार महाराज अमेठी का अंग्रेजी की मुखालिफ्त अविस्मरणीय है। फैजाबाद की कृषक क्रांति इतिहास की रोमांचकारी घटना है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के इतिहास के साथ भी इस प्रदेष का नाम जुड़ा हुआ है। आजादी के अमर सेनानी डॉ. राममनोहर लोहिया और आचार्य नरेन्द्रदेव पर आज भी यह प्रदेष गर्व करता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी इस प्रदेष का महत्व बढ़ा ही है। आज भी बड़े – बड़े नेता अपनी किस्मत का फेसला इसी क्षेत्र में ही करते हैं।

अवधी की उत्पत्ति और इतिहास –

अवधी भाषा की उत्पत्ति कौषली अपभ्रंष से मानी जाती है। वैदिक भाषा से कौषली पालि और कौषली पालि से कौषली प्राकृत और कौषली प्राकृत से कौषली अपभ्रंष का विकास क्रमषः माना जाता है। तमाम अन्य जातियों की भाषाऐं किरात निषाद और द्रविण भाषाओं ने भी इस भाषा के विकास में अपना योगदान दिया है। अवधी के क्रमिक विकास को देखने से प्रतीत होता है कि ब्राह्मण और उपनिषद्काल की भाषा ई.पू. छठी शताब्दी तक आते आते कौषली पालि के रूप में बदल गयी और फिर क्रमागत स्थितियों को पार करती हुई कौषली अपभ्रंष के रूप में प्रतिष्ठित हुई। इसी कौषली अपभ्रंष का ही विकसित रूप अवधी है। वैदिक भाषा का अंत ई.पू. छठी शताब्दी और पालि भाषा का अंत ई. सन् के आसपास माना जा सकता है। कौषली प्राकृत की शुरूआत ई. सन् से होती है और छठी शताब्दी तक इसका अंत हो जाता है। छठी शताब्दी से लेकर 12वीं सदी तक अवधी अपभ्रंष के रूप में रही।

कालांतर में जब कौषल जनपद के बुरे दिन आये तब उसकी भाषा भी षिथिल पड़ गयी। मगध साम्राज्य के उत्थान काल में कौषली प्राकृत का महत्व काफी गौड़ हो गया यह समय मगधी और शौरसेनी के उत्थान का रहा है। कुछ लोगों का कहना है कि कौषली प्राकृत ही बाद में अर्थ मागधी कही जाने लगी परंतु यह एक अटकल ही है। त्रिपिटक की पालि को भी कुछ विद्वान विकृत कौषली कहते हैं।

कौषल जनपद के ह्रासषील काल में अवधी का महत्व नगण्य रहा लेकिन 14वीं सदी के अंत में जब तुगलक सल्तनत का पतन शुरू हुआ सीमांत के शासकों ने विद्रोह करके अपने को स्वतंत्र घोषित कर लिया। जौनपुर के शासक ने सल्तनत से संबंध विच्छेद करके अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिया। किसी न किसी तरह लड़खड़ाते हुये यह साम्राज्य लगभग एक शताब्दी तक चलता रहा। इस काल में प्रदेष की स्वायत्तता से अवधी भाषा और साहित्य संस्कृति का भरपूर विकास हुआ। जौनपुर शासनकाल में ही कुतवन, मंझन ने अपनी महत्वपूर्ण कृतियों की रचना लोक भाषा में ही की। लोक भाषा में होने के बावजूद भी इन कृतियों की गणना श्रेष्ठ साहित्य में होती है। महाकवि तुलसीदास के स्पर्ष से यह भाषा अमर हो गयी। अवधी की विकास परंपरा आज भी जारी है। अवधी भाषा में आज भी श्रेष्ठ साहित्य लिखा जा रहा है। लोक जीवन और लोक साहित्य के प्रति बढ़ते हुये लोगों के आकर्षण से जनभाषा में साहित्य लिखने की प्रवृत्ति काफी जोर पकड़ रही है जिसके परिणामस्वरूप कई महत्वपूर्ण रचनाऐं भी प्रकाष में आ चुकी हैं। जनवादी चेतना के प्रसार के साथ साथ यह आवष्यकता महसूस हो रही है कि इतने विषाल भाषा शषी क्षेत्र की जनता के लिये उसी की भाषा में साहित्य लिखा जाना चाहिये। अवधी के संप्रति साहित्य की चर्चा हम आगे करेंगे, यहां अब अवधी भाषा के क्रमिक विकास स्थिति को स्पष्ट करना उचित होगा।

सम्प्रति अवधी और पुरानी अवधी का अंतर –

जब हम पुरानी अवधी और नयी अवधी की बात करते हैं तो पुरानी अवधी से हमारा मतलब मुल्ला दाऊद, कबीर, जायसी, तुलसी एवं कुतुबन, मंझन की अवधी से होता है। नयी

अवधी का तात्पर्य आजकल बोली जाने वाली या नवीन काव्य भाषा के रूप में प्रयुक्त अवधी से होता है। जहां तक पुरानी अवधी का प्रष्न है उसे हम तमाम सूफी संतों के काव्यों में वास्तविक बोलचाल के रूप में पाते हैं। सूफी संत अधिक पढ़े लिखे नहीं थे। भाषा ही नहीं बल्कि शैली के स्तर पर भी लोक जीवन से इनका अभिन्न संबंध था। गोस्वामी तुलसीदास की अवधी पर पंडिताऊ भाषा का पूरा प्रभाव है। संस्कृत भाषा का संस्कार उनकी अवधी पर हावी है इसलिये उस षिष्ट अवधी को हम पंडितों के बोल चाल की भाषा कह सकते हैं। जिस आम बोल चाल की भाषा में सूफियों ने काव्य रचना की है उस अवधी भाषा का स्वरूप आज भी थोड़े बहुत हेर फेर के साथ उसी तरह मिलता है। नवीन षिक्षा एवं खड़ी हिन्दी और अंग्रेजी के प्रभाव के कारण कुछ बदलाव सहज प्रक्रिया में स्वतः हुये हैं। जैसे अंग्रेजी के टाइम को अवधी भाषी टेम कह कर अपना बना लेते हैं। इसी प्रकार अन्य भाषाओं के शब्द मुख्यतः खड़ी हिन्दी के शब्दों के प्रयोगों ने अवधी का नया रूप खड़ा कर दिया है। शब्दों तक ही नहीं बल्कि वाक्य संरचना पर भी इसका प्रभाव देखा जा सकता है। गुलामी की जो स्पष्ट छाप हर भाषा पर पड़ती है अवधी पर भी देखी पड़ी है। स्वतंत्रता से पूर्व और पष्चात् की अवधी भाषा के वाक्य विन्यास शब्द रचना आदि रूपों में प्रत्यक्ष अंतर देखा जा सकता है।

क्षेत्र और भाषा

जिस प्रकार कौषल का नाम बदलकर अवध हो गया उसी प्रकार कौषली का नाम बदलकर अवधी हो गया जिसे पूर्वी हिन्दी के नाम से भी जाना जाता है। इस क्षेत्र का विस्तार उत्तर में नेपाल पूर्व में भोजपुरी प्रदेष, दक्षिण में बघेली और परिष्चम में बुन्देली एवं कन्नौजी तक है। बघेली और छत्तीसगढ़ी भाषा का संबंध भी अवधी से ही है। इस क्षेत्र के बाहर भी कहीं कहीं अवधी बोली जाती है। अवधी प्रदेष में उत्तरप्रदेष के संपूर्ण 11 जिले फतेहपुर इलाहाबाद एवं हरदोई का अधिकांष भाग कानपुर का कुछ भाग तथा मिर्जापुर का अधिकांष भाग सम्मिलित है। बस्ती की हरैया तहसील एवं जौनपुर के फेरान्त तहसील को छोड़ कर शेष भाग इसी की परिधि में आते हैं। इसका क्षेत्रफल साढ़े पैंतीस हजार वर्गमील है। अवधी बोलने वालों की संख्या 1951 ईस्वी की गणना के अनुसार दो करोड़ चालीस लाख थी। जनसंख्या वृद्धि को ध्यान में रखते हुये आज इनकी संख्या 4 करोड़ मानना उचित है।

लिपि –

अवधी की दो लिपियाँ प्रचलित हैं। एक कैथी लिपि जिसका प्रयोग कायस्थ एवं जमींदार लोग करते थे। कायस्थ अधिकतर पटवारी या लेखपाल का काम करते थे इसलिये पुराने बहीखातों में आज भी इस लिपि का रूप सुरक्षित है। बिहार सूबे में यही लिपि सरकारी रही है। दूसरी लिपि मुडिया कहलाती है, इसे हुण्डी लिपि भी कहते हैं। इसका प्रयोग महाजनी खातों में किया जाता है, साथ ही संकेत लिपि अंक पराई इसी भाषा में बनी है।

अवधी की बोलियाँ –

अवधी समुदाय में दो प्रकार की बोलियाँ प्रचलित हैं – 1. बघेली, 2. छत्तीसगढ़ी

बघेली बघेलखण्ड में बोली जाती है जिसका केन्द्र रीवा है। भाषा की दृष्टि से बघेली और अवधी में कोई विषेष अंतर नहीं है। छत्तीसगढ़ी मातृभाषा के रूप में छत्तीसगढ़ में बोली जाती है। मध्यप्रदेष का रायपुर तथा विलासपुर जिला इसका केन्द्र है।

अवधी की उपबोलियाँ –

डॉ. वसु राम सक्सेना के अनुसार अवधी की तीन विभाषाऐं हैं –

1. पष्चिमी अवधी 2. केन्द्रीय अवधी 3. पूर्वी अवधी

पष्चिमी अवधी के अंतर्गत निम्नलिखित जिले आते हैं –

1. खीरी लखीमपुर 2. सीतापुर 3. लखनऊ 4. उन्नाव 5. फतेहपुर

केन्द्रीय अवधी के अंतर्गत आने वाले प्रमुख जिले हैं –

1. बहराईच 2. बाराबंकी 3. रायबरेली।

पूर्वी अवधी के अंतर्गत आने वाले जिलों की संख्या सात है। जो निम्नलिखित हैं –

1. गोंडा 2. फैजाबाद 3. सुलतानपुर
4. प्रतापगढ़ 5. इलाहाबाद 6. जौनपुर
7. मिर्जापुर।

इसके अतिरिक्त नेपाल की तराई के कुछ भागों में भी अवधी बोली जाती है। अवधी की एक और उपबोली वैसबाड़ी के नाम से प्रसिद्ध है यह वैसबाड़ी का केन्द्र उन्नाव जिला एवं आसपास के क्षेत्रों में बोली जाती है।

भाषा –

यह निर्विवाद सत्य है कि भाषा पर गोस्वामी जी का अप्रतिम अधिकार था। यद्यपि संस्कृत, ब्रज एवं अवधी के ये प्रकांड पंडित थे लेकिन अवधी भाषा में आपकी पैठ बेजोड़ थी। अवधी की प्रकृति एवं गति की अद्‌भुत पहचान गोस्वामी जी में थी। इसीलिये परंपरा प्राप्त देववाणी को नकार कर काव्य भाषा के रूप में लोकभाषा अवधी का ही सहारा लिया। उन्होन वेसिल वयना अवधी को ही अपने भाव – वहन के अनुरूप सहाय पाया।

श्याम सुरभि वय विषद अति, गुनद करहि तेहिं पान

गिरा ग्राम्य सियराम जस, गावहिं सुनहिं सुजान ।।

रामचरित मानस संस्कृत निष्ठ अवधी को सर्वोत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। मानस कार का संस्कार युक्त मानस किसी भी व्यथा कथा पर 'कुहुकि कुहुकि जन कोइस रोई' नहीं कह सकता है वह तो उसे 'विलपति अति कुररी की नाई' ही कहेगा। गोस्वामी जी के इसी भाषा संस्कार पर मुग्ध होकर भाषा साहित्य के अन्वेषकों एवं समीझकों ने उनकी इस काव्य भाषा उत्थान की प्रषंसा करते हुये लिखा है कि –

"अवधी भाषा को संस्कृत का जामा पहनाकर उसे संस्कृत रूप देने की कला गोस्वामी जी की भाषा अवधी को महान गरिमामयी, मधुर तथा भावाभिव्यंजक बना देती है। जायसी आदि कवियों ने अवधी के ठेठ स्वरूप को ग्रहण किया था उसे तुलसीदास जी ने सर्वथा अस्वीकार कर दिया।" डॉ. माताप्रसाद गुप्त का गोस्वामी जी की भाषा के संदर्भ में निम्नांकित विचार दृष्टव्य है –

अवधी रूपों में संस्कृत शब्दों के सम्मिश्रण से गोस्वामी जी ने अत्यंत प्रभावषाली काव्य भाषा का निर्माण किया है। उनका शब्द भंडार, दार्षनिक विवेचन, भक्ति भाव का व्यतिकरण, नवरस परिपाक, सूक्ष्म मनोविज्ञानमय विष्लेषण, कथा वस्तु वर्णन सभी के लिये यथेष्ट हुआ है। उनके भावों के साथ – साथ भाषा का अपूर्व सामंजस्य हुआ है। न कहीं षिथिलता है और न दुरूहता सरलता प्रचुर है। सुबोधता इतनी है कि साधारण योग्यता के पाठक और बड़े बड़े विद्वान दोनों ही रामकथा का आनंद उठाते हैं।

यही तुलसी की भाषागत विषेषता है जिसके कारण यह कवि आज जन – जन में व्याप्त हो गया है। मूर्ख और पंडित दोनों अपने अपने स्तर पर राम कथा में डूब कर समान आनंद प्राप्त करते हैं। यही तुलसी की लोक विवेचनी दृष्टि भाषा और भाव के स्तर पर नानात्व का सृजन करती हुई दीख पड़ती है।

साहित्य –

सुविधा के लिये अवधी साहित्य को हम दो भागों में बांट सकते हैं। पहला लोक साहित्य, दूसरा षिष्ट साहित्य। लोक साहित्य से मेरा मतलब उन दोहों, पदों, बैठकियों, पहेलियों, लोक गाथाओं, लोक गीतों, जातीय गीतों से है जिनका कोई लिखित इतिहास नहीं मिलता है। यह साहित्य श्रुप परंपरा में ही पीढ़ी दर पीढ़ी जीवित रहता है। वास्तव में षिष्ट साहित्य का प्रेरणा स्त्रोत एवं आधार स्थल यही लोक साहित्य होता है जिसके कारण षिष्ट साहित्य में जीवन्तता और सरसता आती है।

गोस्वामी तुलसीदास जी के साथ वैचारिक भिन्नता चाहे जितनी हो लेकिन लोक वृत्तियों के अंकन में यह कवि बेजोड़ रहा है। जीवन के विविध पहलुओं पर बड़ा ही मार्मिक एवं हृदयस्पर्षी चित्र खींच कर यह महाकवि भारतीय जन जीवन की एक एक धड़कन में बस गया है। रामचरित मानस के ही बल पर मोरीषस की

जनता सैकड़ों वर्षों से आज तक अपनी संस्कृति को जीवित रख सकी है।

अवधी का आधुनिक साहित्य –

वास्तव में अवधी का वर्तमान युग वही है जिसे हिन्दी का गद्य युग कहा जाता है। खड़ी बोली के विकास और प्रतिष्ठा के साथ खड़ी बोली में काव्य रचना की प्रवृत्ति भी खूब जोर से बढ़ी। परिणामस्वरूप लोक भाषा में काव्य रचना की प्रवृत्ति का धीरे धीरे ह्रास होने लगा। पूँजीवादी विकास के दिवालिया रास्ते को बाजार भाषा की आवष्यकता पड़ती है इसीलिये वह क्षेत्रीय विषिष्टताओं को कुचलने में भी कोई कोर कसर नहीं उठा रखता। अवधी भी इस तरह के हमले का षिकार होती रही है। आगे चलकर अवधी में कोई विषेष उत्कृष्ट साहित्य नहीं लिखा गया फिर भी पाष्चात्य संस्कृति सभ्यता के रंग में रंगे हुये भारतीय जनों से क्षुब्ध यथार्थ से जूझते हुये कुछ जनवादी प्रवृत्तियों के रचनाकारों ने सामाजिक विसंगतियों पर व्यंग करते हुये बहुत कुछ लिखा है। अवधी में रचना की परंपरा जो मुल्ला दाउद से शुरू होती है वह आज भी किसी न किसी रूप में विद्यमान है। तमाम साहित्यकारों ने अवधी साहित्य की समृद्धि में कोई कोर कसर नहीं उठा रखी है। इनमें पढ़ीस जी विषेष उल्लेखनीय हैं।

आज के आधुनिक युग में साहित्य की चेतना उसी पारंपरिक चेतना की विकास है। बदली हुई नई परिस्थितियों में सभी चीजें कमोवेष बदल जाती हैं। आज विज्ञान की उन्नति के कारण और नये सामाजिक, आर्थिक संबंधों की स्थापना के कारण बहुत से विगत मूल्य इतिहास की वस्तु बन चुके हैं और बहुत से अपने संषोधित रूप में सक्रिय हैं। भाषा के स्तर पर भी इसे देखा जा सकता है। बहुत से नये शब्द सर्वथा नये अर्थों के साथ अवधी से जुड़ गये हैं और बहुत से प्रचलित शब्द अव्यवहारिक और अर्थहीन होते जा रहे हैं। इतिहास बताता है कि अवधी एक विषाल जन समुदाय की अंतरचेतना की अभिव्यक्ति का माध्यम रही है। जौनपुर दरबार के समय अवधी अपने चरमोत्कर्ष थी और जौनपुर दरबार के पतन के साथ इसका भी ह्रासषील इतिहास जुड़ा हुआ है। परंतु भाषा का निर्माण राज दरबारों की अपेक्षा जनता की मड़ैयों में ज्यादा होता है। मलिक मुहम्मद जायसी और गोस्वामी जी ने अवधी को बुलन्दी के चरम बिन्दु पर पहुंचा दिया।

कालांतर में लोक संस्कृतियों के अध्ययन की तरफ लोगों का आकर्षण बढ़ा तो अवधी ने अपनी अद्भुत क्षमता से लोगों को एक बार फिर चमत्कृत कर दिया। भाषा साहित्य और संस्कृति की पारंपरिक संरचना को एकदम अलग नहीं किया जा सकता। बदलते हुये सामाजिक रूपों के साथ भाषा की भी अभिव्यक्ति क्षमता बढ़ती रही है। नये परिवेष की तर्क संगत व्याख्या और उसे बदलने में भाषा की बड़ी ही निर्णायक भूमिका होती है।

*****